ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 5, May 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

प्रवासन प्रतिरूपों एवं प्रवृत्तियों का विश्लेषण: जिला हनुमानगढ़, राजस्थान का एक भौगोलिक अध्ययन

(1991-2011)

[1]मुकेश कुमार, [2]डॉ. आशुतोष

[1]शोधार्थी, अर्थ साइंस विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक (राजस्थान)।

[2]शोध पर्यवेक्षक, एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थ साइंस विभाग, वनस्थली विद्यापीठ।

सार-

प्रवास किसी भी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय प्रक्रिया है। यह अध्ययन राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में 1991 से 2011 तक की प्रवास प्रवृत्तियों और प्रतिरूपों का विश्लेषण करता है। अध्ययन का आधार जनगणना प्रतिवेदन, सरकारी दस्तावेज़ों और शोध अध्ययनों से प्राप्त द्वितीयक डेटा है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि 1991 में आंतरिक जिला प्रवास 58.93% था, जो 2011 में घटकर 45.81% रह गया, जबकि अंतर-जिला और अंतर-राज्य प्रवास में वृद्धि हुई। इसका प्रमुख कारण रोजगार के अवसर और कृषि में परिवर्तन रहे। अंतर-राज्य प्रवास में हरियाणा (51.34%) और पंजाब (34.50%) प्रमुख स्रोत राज्य रहे।

लैंगिक आधार पर किए गए विश्लेषण से पता चलता है कि महिलाओं के प्रवास का मुख्य कारण विवाह (69.39%) था, जबकि कुल प्रवासियों में यह आंकड़ा 50.24% रहा। पुरुष प्रवासियों के लिए रोजगार (30.30%) प्रमुख कारण था। ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमिक प्रवास अधिक देखा गया, जहां कृषि कार्य में महिलाओं की भागीदारी अधिक थी। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हनुमानगढ़ जिले में रोजगार के अवसर, शहरी नियोजन और आधारभूत संरचना के सुधार की आवश्यकता है, ताकि प्रवास को प्रभावी रूप से प्रबंधित किया जा सके। प्रवास प्रवृत्तियों की गहरी समझ नीति-निर्माताओं को कार्यबल की गतिशीलता और शहरी विस्तार से जुड़ी आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने में सहायता कर सकती है।

मुख्य शब्द: *प्रवासन प्रतिरूप एवं प्रवृत्तियाँ, श्रमिक वर्ग प्रवासन, ग्रामीण-शहरी प्रवास,*

हनुमानगढ़ जिला, प्रवास की दिशा।

1. परिचय

प्रवासन किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या संरचना, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, और आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। प्रवासन मुख्य रूप से विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं पर्यावरणीय कारणों से प्रेरित होता है (Todaro & Smith, 2012)। भारत जैसे विकासशील देशों में प्रवासन की प्रवृत्ति विशेष रूप से कार्य अवसरों, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता एवं जलवायु परिवर्तनों पर निर्भर करती है (Bhagat, 2017)।

हनुमानगढ़ जिला, जो राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है, ऐतिहासिक रूप से एक कृषि-प्रधान क्षेत्र रहा है। हरित क्रांति (Green Revolution) के प्रभाव से यह जिला हरियाणा और पंजाब जैसे पड़ोसी राज्यों से श्रमिक प्रवासन का केंद्र बना (Chand, 2014)। जनगणना आंकड़ों के अनुसार, 1991 से 2011 के बीच हनुमानगढ़ जिले में प्रवासन के प्रतिरूपों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। यहाँ ग्रामीण से शहरी प्रवासन में वृद्धि हुई है, जिससे जिले के शहरी केंद्रों का विस्तार हुआ है। साथ ही, प्रवासन का प्रमुख कारण रोजगार, कृषि संकट, और शिक्षा की बेहतर सुविधाओं की तलाश रहा है (Census of India, 2011)।

2. शोध पद्धति

यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, जिनका संकलन विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, जनगणना दस्तावेजों, शोध पत्रों और पुस्तकों से किया गया है। आंकड़ों के मुख्य स्रोतों में भारत की जनगणना प्रतिवेदन (1991, 2001, 2011) शामिल हैं, जो प्रवासन के स्वरूप, दिशा और पैमाने को समझने में सहायक रहे हैं। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों, ग्राफिक प्रदर्शन, तथा तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से किया गया है, जिससे जिले में प्रवासन की प्रवृत्तियों में आए बदलावों को समग्र रूप से समझा जा सके।

3. अध्ययन क्षेत्र

हनुमानगढ़ जिला राजस्थान राज्य के उत्तर दिशा में 28°35' से 29°57'20'' उत्तरी अक्षांश

तथा 73°49'52'' से 75°31'41'' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। यह उत्तर में पंजाब राज्य तथा पश्चिम में श्रीगंगानगर, पूर्व में चूरू और दक्षिण में बीकानेर जिलों से घिरा हुआ है। 12 जुलाई 1994 को श्रीगंगानगर से विभाजित होकर हनुमानगढ़ एक स्वतंत्र जिला बना। इसका कुल क्षेत्रफल 12,645 वर्ग किलोमीटर है और यह अर्ध-शुष्क जलवायु क्षेत्र में आता है, जहाँ वार्षिक औसत वर्षा 225-300 मिमी होती है। गर्मियों में तापमान 45°C तक पहुँच जाता है, जबकि सर्दियों में यह 0°C तक गिर जाता है (शर्मा, 2018)। जनगणना 2011 के अनुसार, जिले की कुल जनसंख्या 1,774,692 थी, जिसमें पुरुषों की संख्या 936,323 और महिलाओं की संख्या 838,369 थी, जबकि साक्षरता दर 67.13% थी। जिले की भौगोलिक अवस्थिति, जलवायु परिस्थितियाँ और कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था प्रवासन के प्रतिरूपों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं, जिससे यह प्रवासन अध्ययन के लिए एक उपयुक्त क्षेत्र बनता है।

आरेख-1: अध्ययन क्षेत्र का अवस्थिति मानचित्र

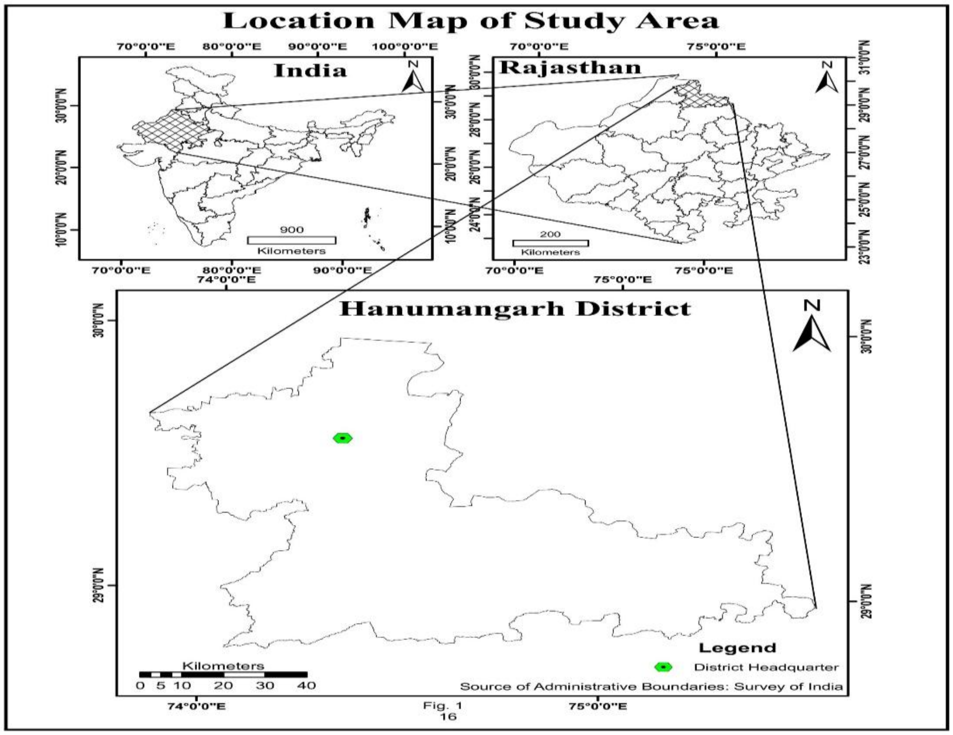

4. प्रवासन के प्रतिरूप एवं प्रवृत्तियाँ

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या प्रवास सम्बन्धी विश्लेषण को क्षेत्रीयता के आधार पर निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया गया है-

i. **अन्तःजिला प्रवास** – जिले के भीतर, लेकिन एक स्थान से दूसरे स्थान पर।
ii. **अन्तर्जिला प्रवास** – राजस्थान राज्य के भीतर, लेकिन अन्य जिलों से हनुमानगढ़ जिले में प्रवास।
iii. **अन्तर्राज्यीय प्रवास** – अन्य राज्यों से हनुमानगढ़ जिले में प्रवास।
iv. **अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास** – अन्य देशों से हनुमानगढ़ जिले में प्रवास।

तालिका-1: हनुमानगढ़ जिले में दूरी अनुसार प्रवासन की प्रवृत्तियाँ (पिछले निवास स्थान के आधार पर) 1991-2011

प्रवासन श्रेणी	1991		2001		2011	
	प्रवासित जनसंख्या	प्रतिशत	प्रवासित जनसंख्या	प्रतिशत	प्रवासित जनसंख्या	प्रतिशत
अन्तःजिला प्रवास	620016	58.93	269790	52.87	332399	45.81
अन्तर जिला प्रवास	139351	13.24	120890	23.70	184996	25.50
अन्तर्राज्यीय प्रवास	266040	25.29	117563	23.05	199732	27.53
अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास	26780	2.54	1989	0.39	8556	1.18
कुल	**1052187**	**100.00**	**510232**	**100.00**	**725683**	**100.00**

स्रोतः Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D03, D06 Tables, 1991, 2001, 2011

आरेख-2: हनुमानगढ़ जिले में दूरी अनुसार प्रवासन की प्रवृत्तियाँ (पिछले निवास स्थान के आधार पर) 1991-2011

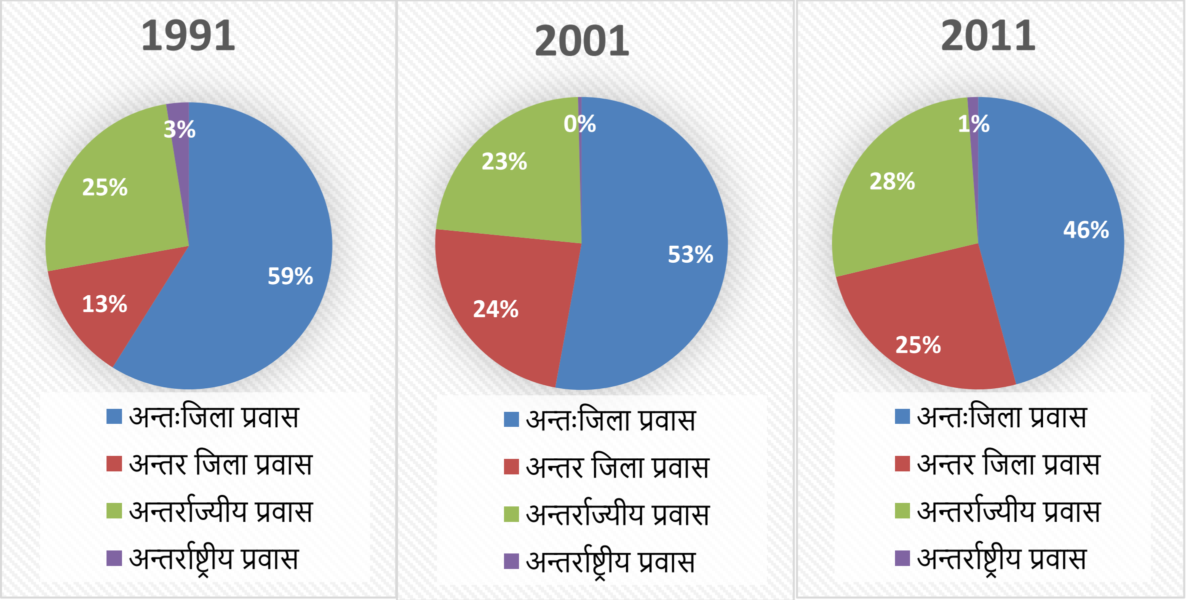

स्रोतः Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D03, D06 Tables, 1991, 2001, 2011

तालिका-1 एवं आरेख-2 में हनुमानगढ़ जिले में 1991 से 2011 के बीच दूरी के आधार पर प्रवासन की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। **अन्तःजिला प्रवास**, जो कि जिले के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर होने वाले प्रवास को दर्शाता है, 1991 में कुल प्रवासन का 58.93% था, जो 2001 में घटकर 52.87% और 2011 में 45.81% रह गया। यह दर्शाता है कि स्थानीय स्तर पर प्रवास की प्रवृत्ति में कमी आई है, संभवतः जिले में रोजगार और जीवन-यापन की बेहतर संभावनाओं के कारण लोगों को अधिक स्थानांतरण की आवश्यकता नहीं रही।

अन्तर जिला प्रवास, अर्थात राजस्थान के भीतर अन्य जिलों से हनुमानगढ़ में प्रवास, 1991 में कुल प्रवास का 13.24% था, जो 2001 में बढ़कर 23.70% और 2011 में 25.50% हो गया। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि अन्य जिलों से हनुमानगढ़ की ओर प्रवासन बढ़ा है, जो संभवतः कृषि एवं व्यापारिक अवसरों में वृद्धि और जिले में बुनियादी ढांचे के विकास का

संकेत देता है।

अन्तर्राज्यीय प्रवास, जिसमें अन्य राज्यों से हनुमानगढ़ जिले में आने वाले प्रवासियों को सम्मिलित किया गया है, 1991 में 25.29% था, जो 2001 में घटकर 23.05% हुआ लेकिन 2011 में पुनः बढ़कर 27.53% हो गया।

तालिका- 2: हनुमानगढ़ जिले में प्रवासन के शीर्ष 5 स्रोत राज्य/केंद्र शासित प्रदेश- 2011

क्रमांक	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	प्रवासित जनसंख्या	प्रतिशत
1.	हरियाणा	102537	51.34
2.	पंजाब	68911	34.50
3.	उत्तर प्रदेश	14950	7.49
4.	बिहार	7014	3.51
5.	दिल्ली	1181	0.59
6.	अन्य	5139	2.57
कुल		**199732**	**100.00**

स्रोत: Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D03, Table, 2011

आरेख-3: हनुमानगढ़ जिले में प्रवासन के शीर्ष 5 स्रोत राज्य/केंद्र शासित प्रदेश- 2011

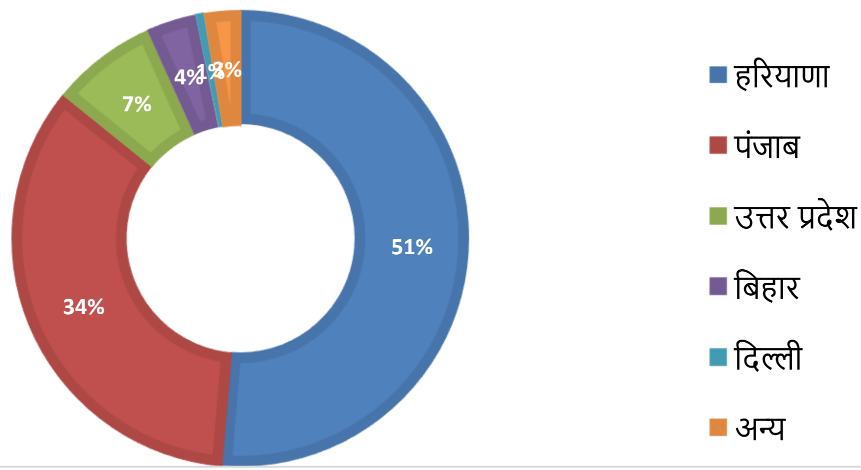

स्रोत: Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D3, Table, 2011

तालिका- 2 एवं आरेख-3 के अनुसार, हनुमानगढ़ जिले में 2011 में प्रवास के शीर्ष स्रोत राज्य हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली रहे। इन राज्यों से प्रवासन मुख्यतः रोजगार, कृषि, व्यापारिक अवसरों और पारिवारिक कारणों से प्रेरित रहा है। जिले में प्रवासन का प्रमुख स्रोत हरियाणा (51.34%) रहा, जहाँ से भौगोलिक निकटता, कृषि और व्यापारिक संबंधों के कारण अध्ययन क्षेत्र की ओर प्रवास हुआ। इसके बाद पंजाब (34.50%) से प्रवास हुआ, जो समान आर्थिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित था। उत्तर प्रदेश (7.49%) और बिहार (3.51%) से प्रवास मुख्य रूप से रोजगार की तलाश में हुआ, जबकि दिल्ली से प्रवास अपेक्षाकृत कम (0.59%) रहा। अन्य राज्यों से कुल 2.57% प्रवासी हनुमानगढ़ जिले में आए।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास, अर्थात विदेशों से हनुमानगढ़ जिले में प्रवास, 1991 में 2.54% था, जो 2001 में घटकर मात्र 0.39% रह गया। हालांकि, 2011 में इसमें मामूली वृद्धि हुई और यह 1.18% हो गया। यह परिवर्तन दर्शाता है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवासन का योगदान अत्यंत सीमित रहा है, और जिले में प्रवास मुख्यतः आंतरिक (राष्ट्रीय स्तर पर) प्रवास तक सीमित रहा है।

इस प्रकार, 1991 से 2011 के बीच हनुमानगढ़ जिले में प्रवासन प्रवृत्तियों में महत्वपूर्ण

बदलाव हुए। स्थानीय (अन्तःजिला) प्रवासन में गिरावट आई, जबकि अन्य जिलों एवं अन्य राज्यों से प्रवासन में वृद्धि देखी गई। अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासन की प्रवृत्ति न्यूनतम रही, जिससे स्पष्ट होता है कि जिले में प्रवास मुख्यतः आंतरिक रूप से ही हो रहा है।

श्रमिक वर्ग अनुसार जनसंख्या प्रवासन

2011 की जनगणना के अनुसार, हनुमानगढ़ जिले में श्रमिक वर्ग के अनुसार प्रवासन का विश्लेषण दर्शाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्य श्रमिकों (228,851) और सीमांत श्रमिकों (128,380) की संख्या अधिक थी, जो दर्शाती है कि कृषि आधारित रोजगार ग्रामीण अर्थव्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाता है। महिलाओं (152,801) की मुख्य श्रमिकों के रूप में भागीदारी पुरुषों (76,050) की तुलना में दोगुनी से अधिक थी, जो ग्रामीण महिलाओं की कृषि एवं सहायक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका को इंगित करती है। गैर-श्रमिक वर्ग में भी ग्रामीण महिलाओं (148,533) की संख्या अधिक थी, जो इस क्षेत्र में आर्थिक रूप से निष्क्रिय आबादी की उच्च उपस्थिति को दर्शाती है (तालिका- 3)।

तालिका- 3: हनुमानगढ़ जिले में श्रमिक वर्ग अनुसार जनसंख्या प्रवासन- 2011

		मुख्य श्रमिक	सीमांत श्रमिक	गैर श्रमिक	कुल
ग्रामीण	पुरूष	76050	10599	53903	140552
	महिला	152801	117781	148533	419115
	कुल	228851	128380	202436	559667
शहरी	पुरूष	39191	2763	23132	65086
	महिला	10441	4573	85916	100930
	कुल	49632	7336	109048	166016
कुल	पुरूष	115241	13362	77035	205638
	महिला	163242	122354	234449	520045
	कुल	**278483**	**135716**	**311484**	**725683**

स्रोत: Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D03, Table, 2011;

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 5, May 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

District census Handbook, Hanumangarh-2011.

शहरी क्षेत्रों में कुल श्रमिकों की संख्या अपेक्षाकृत कम थी, जहाँ मुख्य श्रमिकों की संख्या 49,632 और सीमांत श्रमिकों की संख्या 7,336 थी। इसमें पुरुषों (39,191) की भागीदारी महिलाओं (10,441) की तुलना में अधिक थी, इससे ज्ञात होता है कि शहरी क्षेत्रों में पुरुषों के औपचारिक श्रम बाजार में अधिक प्रतिनिधित्व था। गैर-श्रमिक वर्ग में शहरी महिलाओं (85,916) की बड़ी संख्या यह दर्शाती है कि वे मुख्य रूप से घरेलू गतिविधियों पर निर्भर थीं (आरेख-4)।

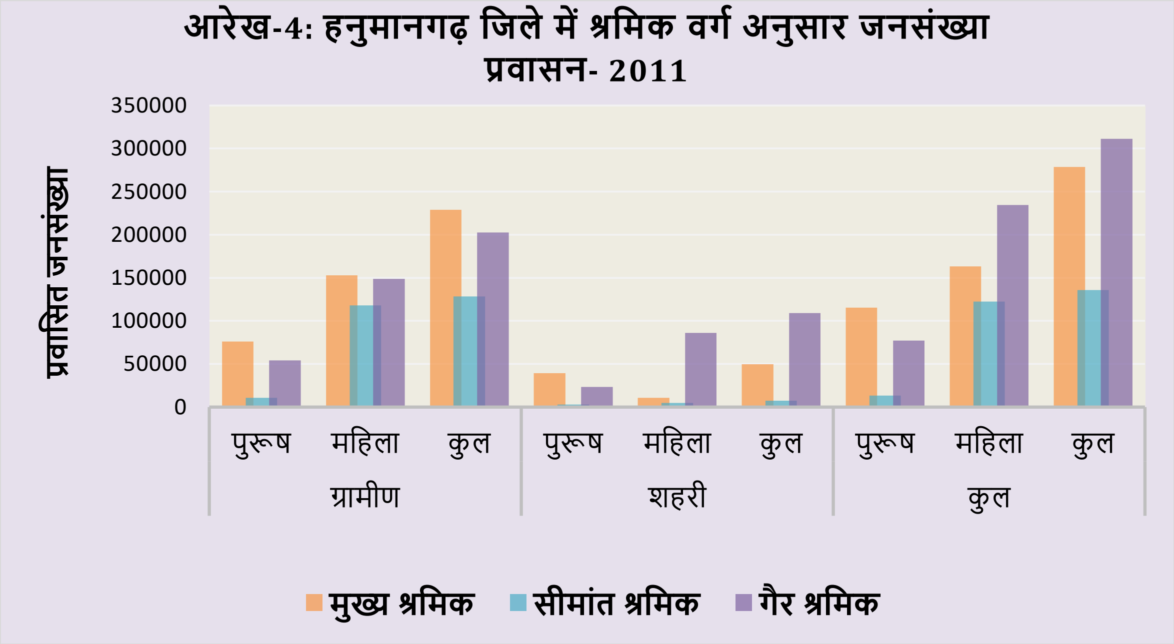

स्रोत: Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D03, Table, 2011; District census Handbook, Hanumangarh-2011.

कुल मिलाकर, जिले में कुल 725,683 प्रवासित जनसंख्या में से 278,483 मुख्य श्रमिक थे, जबकि 311,484 लोग गैर-श्रमिक वर्ग में थे। यह प्रवासन की प्रवृत्तियों में एक महत्वपूर्ण प्रतिरूप को उजागर करता है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्य रूप से कृषि एवं असंगठित क्षेत्र में श्रमिक प्रवास दिखाई देता है, जबकि शहरी क्षेत्रों में औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व है।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 5, May 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

प्रवास की दिशा

तालिका- 4: हनुमानगढ़ जिले में प्रवास की दिशा- 2011

प्रवास के प्रकार	पुरूष	महिला	कुल
ग्रामीण से शहरी	14797	29238	44035
ग्रामीण से ग्रामीण	104055	331337	435392
शहरी से ग्रामीण	33073	46932	80005
शहरी से शहरी	25114	46701	71815

स्रोतः Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D03, Table, 2011.

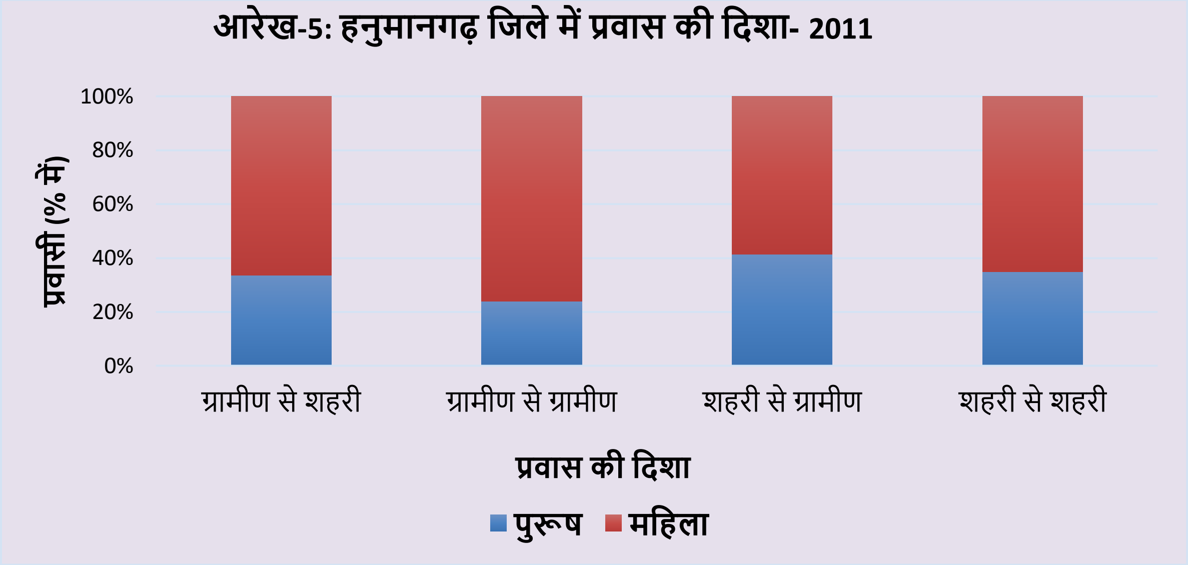

स्रोतः Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D03, Table, 2011.

2011 की जनगणना के अनुसार, हनुमानगढ़ जिले में प्रवास की दिशा में महत्वपूर्ण भिन्नताएँ देखी गईं। तालिका- 4 एवं आरेख-5 के अनुसार, ग्रामीण से ग्रामीण प्रवासन सर्वाधिक था, जिसमें कुल 4,35,392 लोग (104,055 पुरुष और 3,31,337 महिलाएँ) शामिल थे, जो मुख्य रूप से विवाह, पारिवारिक पुनर्स्थापन, और कृषि संबंधी कारणों से हुआ। इसके बाद ग्रामीण से शहरी प्रवासन हुआ, जिसमें 44,035 प्रवासी (14,797 पुरुष और 29,238

महिलाएँ) शामिल थे, जो बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और रोजगार की तलाश में थे। शहरी से ग्रामीण प्रवासन अपेक्षाकृत कम था, लेकिन फिर भी 80,005 लोग (33,073 पुरुष और 46,932 महिलाएँ) शहरी क्षेत्रों से गाँवों में गए, जो पारिवारिक कारणों, कृषि कार्य, या अन्य निजी कारणों से हुआ। वहीं, शहरी से शहरी प्रवासन में 71,815 लोग (25,114 पुरुष और 46,701 महिलाएँ) शामिल थे, जो मुख्य रूप से नौकरी और व्यापार के अवसरों से प्रेरित थे। ये आँकड़े दर्शाते हैं कि जिले में प्रवासन की दिशा सामाजिक एवं आर्थिक कारकों पर निर्भर थी, जिसमें महिलाओं का प्रवासन अधिकतर विवाहजनित था, जबकि पुरुषों का प्रवासन रोजगार और व्यवसाय से संबंधित था।

5. प्रवास के मुख्य कारण

हनुमानगढ़ जिले में 2011 की जनगणना के अनुसार, प्रवासन के विभिन्न कारणों का विश्लेषण किया गया, जिससे सामाजिक एवं आर्थिक गतिशीलता को समझा जा सकता है। विवाह इसका प्रमुख कारण रहा, जिससे कुल 50.24% प्रवासन हुआ। विशेष रूप से, महिलाओं में विवाह संबंधी प्रवासन 69.39% रहा, जबकि पुरुषों में यह मात्र 1.79% था, जो महिलाओं की पारंपरिक सामाजिक संरचना को दर्शाता है (तालिका- 5)।

तालिका- 5: हनुमानगढ़ जिले में होने वाले प्रवास के मुख्य कारण (2011)

प्रवासन के कारण	**कुल**	**%**	**पुरूष**	**%**	**महिला**	**%**
काम/रोज़गार	80695	11.02	62336	30.30	18359	3.53
व्यवसाय	2156	0.30	879	0.43	1277	0.25
शिक्षा	1883	0.26	1113	0.54	770	0.15
विवाह	364479	50.24	3691	1.79	360788	69.39
जन्म के बाद स्थानांतरित	59192	8.16	36475	17.74	22717	4.37
परिवार के साथ स्थानांतरित	128702	17.74	59122	28.75	69580	13.38
अन्य	88576	12.21	42022	20.43	46554	8.95

कुल	725683	100.00	205638	100.00	520045	100.00

स्रोत: *Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D03, Table, 2011.*

आरेख- 6: हनुमानगढ़ जिले में होने वाले प्रवास के मुख्य कारण (2011)

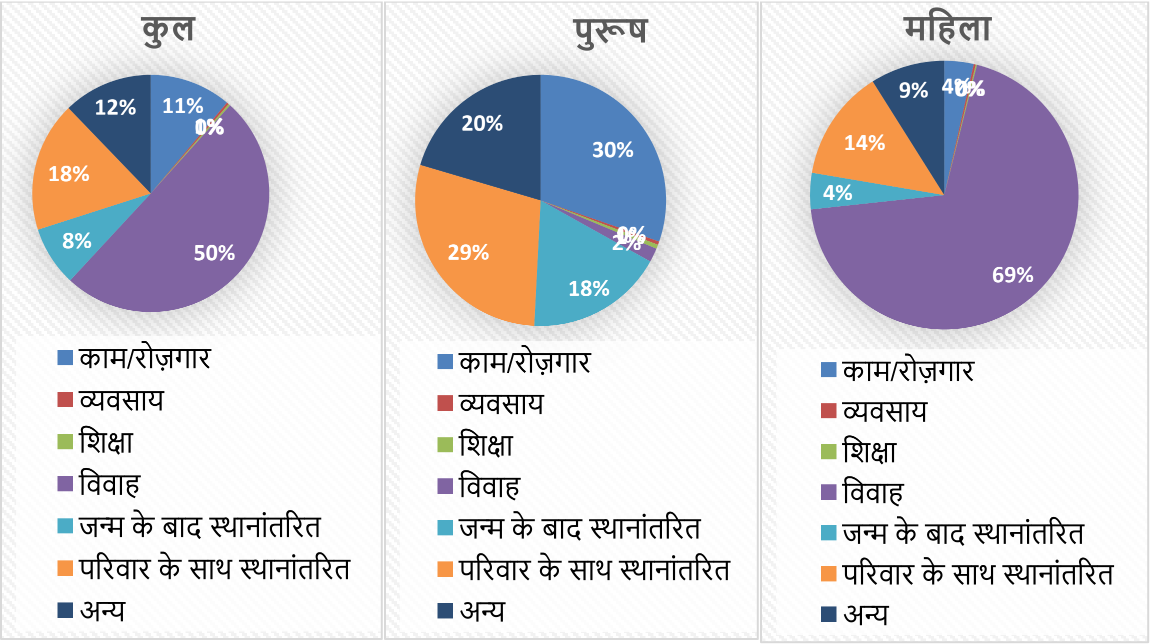

स्रोत: *Office of Registrar General and Census Commissioner, India, Migration D03, Table, 2011.*

रोज़गार के कारण 11.02% प्रवासन हुआ, जिसमें पुरुषों का हिस्सा 30.30% था, जबकि महिलाओं का मात्र 3.53%। इससे स्पष्ट होता है कि पुरुषों का प्रवासन मुख्य रूप से आजीविका की तलाश में हुआ। परिवार के साथ स्थानांतरित होने वाले प्रवासियों का प्रतिशत 17.74 था, जिसमें पुरुषों का योगदान 28.75% और महिलाओं का 13.38% था, जो परिवार-आधारित प्रवासन की प्रवृत्ति को दर्शाता है (आरेख- 6)।

इसके अतिरिक्त, जन्म के बाद स्थानांतरित होने वाले प्रवासियों का प्रतिशत 8.16% था, जो मुख्य रूप से पुरुषों (17.74%) में अधिक था। अन्य कारणों से 12.21% प्रवासन हुआ, जिसमें पुरुषों का प्रतिशत 20.43% और महिलाओं का 8.95% रहा। व्यवसाय और शिक्षा के कारण प्रवासन क्रमशः 0.30% और 0.26% था, जो अपेक्षाकृत कम महत्व रखता है (आरेख- 6)।

इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि हनुमानगढ़ जिले में प्रवासन का सबसे बड़ा कारक विवाह है, विशेष रूप से महिलाओं के लिए। वहीं, पुरुषों में प्रवासन मुख्य रूप से आजीविका, परिवार के साथ स्थानांतरण और अन्य व्यक्तिगत कारणों से प्रेरित रहा है।

6. निष्कर्ष

हनुमानगढ़ जिले में 1991 से 2011 तक प्रवासन की प्रवृत्तियों में महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए। 1991 में जिले के भीतर (अन्तःजिला) प्रवासन 58.93% था, जो 2001 में घटकर 52.87% और 2011 में 45.81% रह गया। इसके विपरीत, अन्तरजिला प्रवासन 1991 में 13.24% से बढ़कर 2001 में 23.70% और 2011 में 25.50% हो गया, जो जिले में बढ़ते रोजगार और व्यापारिक अवसरों को दर्शाता है। अन्तर्राज्यीय प्रवासन में भी वृद्धि हुई, जो 1991 में 25.29% से 2011 में 27.53% हो गया। प्रमुख स्रोत राज्यों में हरियाणा (51.34%) और पंजाब (34.50%) रहे, जिनसे कृषि, व्यापार और रोजगार के अवसरों के कारण प्रवास हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासन में गिरावट देखी गई, जो 1991 में 2.54% थी, जो 2001 में घटकर 0.39% रह गयी, और 2011 में 1.18% हो गयी।

श्रमिक वर्ग अनुसार प्रवासन में, 2011 में जिले में कुल 278,483 मुख्य श्रमिक प्रवासी थे, जबकि 311,484 लोग गैर-श्रमिक वर्ग में थे। ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्य श्रमिकों की संख्या 228,851 थी, जिसमें महिलाओं (152,801) की भागीदारी पुरुषों (76,050) से अधिक थी, जिससे कृषि में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट होती है। शहरी क्षेत्रों में मुख्य श्रमिकों की संख्या 49,632 थी, जिसमें पुरुषों (39,191) का योगदान अधिक था।

प्रवास की दिशा के अनुसार, 2011 में ग्रामीण से ग्रामीण प्रवासन सबसे अधिक (4,35,392) था, जिसमें 3,31,337 महिलाएँ और 1,04,055 पुरुष शामिल थे। ग्रामीण से शहरी प्रवासन 44,035 था, जिसमें महिलाओं की संख्या (29,238) पुरुषों (14,797) से अधिक थी। शहरी से ग्रामीण प्रवासन 80,005 व्यक्ति और शहरी से शहरी प्रवासन 71,815 व्यक्ति दर्ज किया गया।

ये आँकड़े दर्शाते हैं कि जिले में प्रवासन की प्रवृत्तियाँ मुख्य रूप से सामाजिक एवं आर्थिक कारकों से प्रभावित रहीं। महिलाओं का प्रवासन मुख्य रूप से विवाहजनित था, जबकि पुरुषों

का प्रवासन रोजगार और व्यापार से संबंधित था। नीति-निर्माताओं को रोजगार, बुनियादी ढांचे और शहरी सुविधाओं के विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है ताकि प्रवासन प्रवृत्तियों को संतुलित किया जा सके।

7. सुझाव

हनुमानगढ़ जिले में प्रवासन की प्रवृत्तियों को देखते हुए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

1. **रोज़गार के अवसर बढ़ाना** – जिले में स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसरों को विकसित करने के लिए कृषि-आधारित उद्योगों, लघु एवं मध्यम उद्योगों, और स्वरोजगार योजनाओं को बढ़ावा दिया जाए, जिससे काम की तलाश में होने वाला बाहरी प्रवासन कम हो।

2. **शहरीकरण की प्रभावी योजना** – ग्रामीण से शहरी प्रवासन को संतुलित करने के लिए बेहतर बुनियादी ढांचे, परिवहन, स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाओं का विकास किया जाए, जिससे शहरी क्षेत्रों में अत्यधिक जनसंख्या दबाव को रोका जा सके।

3. **महिला-केंद्रित नीतियाँ** – विवाह और परिवार के साथ स्थानांतरण महिलाओं के प्रवासन का मुख्य कारण है। महिलाओं की शिक्षा, कौशल विकास और स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने वाली योजनाओं को लागू किया जाए ताकि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।

4. **श्रमिकों के लिए सुरक्षा और कल्याणकारी योजनाएँ** – श्रमिक वर्ग का अंतरराज्यीय प्रवासन अधिक देखा गया है। इस संदर्भ में श्रम कल्याण योजनाओं, सामाजिक सुरक्षा, और बेहतर मजदूरी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है ताकि स्थानीय स्तर पर ही रोजगार उपलब्ध हो सके।

5. **प्रवासन डेटा का सतत संकलन और विश्लेषण** – प्रवासन के पैटर्न को समझने और नीतिगत सुधार के लिए सटीक डेटा संग्रह और अनुसंधान की आवश्यकता है, जिससे प्रवासन की प्रवृत्तियों के अनुरूप योजनाएँ बनाई जा सकें।

6. **शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा** – युवाओं के लिए तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्टार्टअप योजनाओं को सशक्त किया जाए, जिससे जिले के भीतर ही उन्हें बेहतर रोजगार अवसर मिल सकें।

7. **कृषि और जल संसाधनों का विकास** – चूंकि हनुमानगढ़ कृषि-प्रधान जिला है, इसलिए आधुनिक कृषि तकनीकों, जल संरक्षण, और फसल विविधीकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है ताकि कृषि क्षेत्र में अधिक रोजगार के अवसर सृजित किए जा सकें।

इन सुझावों को लागू करने से जिले में प्रवासन के असंतुलन को नियंत्रित किया जा सकता है और स्थानीय स्तर पर रोजगार, बुनियादी सुविधाओं और सामाजिक-आर्थिक विकास को मजबूती मिल सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Bhagat, R. B. (2017). Migration and urban transition in India: Implications for development. *United Nations Expert Group Meeting on Sustainable Cities, Human Mobility and International Migration*, 1-19.

Census of India. (1991). *District Census Handbook: Hanumangarh (Part XII-A & B)*. Directorate of Census Operations, Rajasthan.

Census of India. (2001). *District Census Handbook: Hanumangarh (Series-09, Part XII-A & B)*. Directorate of Census Operations, Rajasthan.

Census of India. (2011). *District Census Handbook: Hanumangarh (Series-09, Part XII-A & B)*. Directorate of Census Operations, Rajasthan. Retrieved from https://censusindia.gov.in/

Census of India. (2011). *Migration tables*. Registrar General of India, Ministry of Home Affairs.

Chand, R. (2014). Regional disparities, migration, and

urbanization in India. *Economic and Political Weekly*, *49*(26/27), 23-31.

Government of Rajasthan. (2013). *Rajasthan Economic Review 2012-13*. Directorate of Economics and Statistics, Government of Rajasthan.

Jain, R., & Meena, R. (2015). Patterns and determinants of seasonal migration in western Rajasthan. *Indian Journal of Labour Economics*, *58*(3), 411-427. https://doi.org/10.1007/s41027-015-0022-1

Lee, E. S. (1966). A theory of migration. *Demography*, *3*(1), 47-57. https://doi.org/10.2307/2060063

Ministry of Labour and Employment. (2010). *Report on Migration Survey in India*. Government of India. Retrieved from https://labour.gov.in/

Ravenstein, E. G. (1885). The laws of migration. *Journal of the Statistical Society of London*, *48*(2), 167-235. https://doi.org/10.2307/2979181

Sharma, M. (2010). Seasonal migration and socio-economic transformation in Rajasthan. *Rajasthan Economic Review*, *12*(4), 221-238.

Sharma, P., & Kumar, A. (2019). Rural to urban migration in Rajasthan: Trends and determinants. *Journal of Social and Economic Studies*, *41*(3), 65-89.

Srivastava, R., & Sasikumar, S. K. (2003). An overview of migration in India, its impacts and key issues. *Migration, Development and Pro-Poor Policy Choices in Asia*. International Labour Organization.

Todaro, M. P., & Smith, S. C. (2012). *Economic development* (11th ed.). Pearson.